http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 6, 58-60

Article ID:608

देसी गाय आधारित खेती : पर्यावरण संरक्षण और किसान समृद्धि की नई राह

डॉ. किरण एन. पटेल[1], डॉ. स्वाति एस. शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

[2]प्रोफेसर, ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

***अनुरूपी लेखक**

किरण एन. पटेल*

भारत सदियों से कृषि और पशुपालन प्रधान देश रहा है। यहाँ कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और प्रकृति के साथ सामंजस्य का प्रतीक भी है। भारतीय कृषि व्यवस्था में देसी गाय का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन काल से ही देसी गाय को खेती की आधारशिला माना जाता था। खेत की उर्वरता, जैविक खाद, प्राकृतिक कीट नियंत्रण, ऊर्जा, पोषण तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था—इन सभी का केंद्र देसी गाय हुआ करती थी। आधुनिक रासायनिक कृषि के प्रसार के बाद यह परंपरा धीरे-धीरे कमजोर हुई, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल एवं पर्यावरण प्रदूषण, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा किसानों की आय पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिला।

वर्तमान समय में जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट और टिकाऊ कृषि की आवश्यकता पर गंभीरता से विचार कर रही है, तब देसी गाय आधारित खेती पुनः एक प्रभावी विकल्प के रूप में उभर रही है।

यह खेती केवल जैविक उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा ग्रामीण रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम भी है। देसी गाय आधारित कृषि प्राकृतिक खेती, जैविक खेती और एकीकृत कृषि प्रणाली का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है।

देसी गाय का कृषि में विशेष महत्व

भारतीय देसी गाय केवल दूध उत्पादन का स्रोत नहीं है, बल्कि वह एक संपूर्ण कृषि प्रणाली की आधारशिला है। देसी गाय का गोबर और गौमूत्र कृषि के लिए अत्यंत उपयोगी प्राकृतिक संसाधन हैं। इनसे तैयार जैविक खाद मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है, जबकि गौमूत्र से बने जैविक कीटनाशक फसलों को अनेक कीट एवं रोगों से सुरक्षित रखते हैं।

देसी गाय के गोबर में करोड़ों लाभकारी सूक्ष्मजीव पाए जाते हैं, जो मिट्टी की जैविक सक्रियता बढ़ाते हैं। इससे भूमि में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ती है, मिट्टी भुरभुरी बनती है, जल धारण क्षमता में सुधार होता है तथा पौधों को आवश्यक पोषक तत्व स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होते हैं। यही कारण है कि देसी गाय आधारित खेती में रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। भारतीय कृषि वैज्ञानिकों का भी मानना है कि स्वस्थ मिट्टी ही टिकाऊ कृषि की आधारशिला है, और स्वस्थ मिट्टी के निर्माण में देसी गाय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक खेती का आधार है देसी गाय

आज प्राकृतिक खेती (Natural Farming) की अवधारणा पूरे देश में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इस खेती पद्धति में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग न्यूनतम अथवा पूर्णतः समाप्त कर दिया जाता है। इसके स्थान पर जीवामृत, बीजामृत, घनजीवामृत, पंचगव्य, गोमूत्र अर्क तथा अन्य जैविक घोलों का उपयोग किया जाता है, जिनका मुख्य आधार देसी गाय होती है।

एक स्वस्थ देसी गाय से प्राप्त गोबर एवं गौमूत्र अनेक एकड़ भूमि की खेती के लिए पर्याप्त जैविक घोल तैयार करने में सक्षम होते हैं। इससे किसानों की उत्पादन लागत में उल्लेखनीय कमी आती है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर होने वाला भारी खर्च बच जाता है तथा खेती अधिक लाभकारी बन जाती है।

प्राकृतिक खेती केवल उत्पादन की तकनीक नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की एक समग्र कृषि पद्धति है, जिसमें मिट्टी, जल, जीव-जंतु और मनुष्य सभी का संरक्षण होता है।

पर्यावरण संरक्षण में देसी गाय आधारित खेती की भूमिका

आज रासायनिक कृषि के कारण मिट्टी, जल और वायु प्रदूषण गंभीर समस्या बन चुके हैं। अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के उपयोग से भूमि की उर्वरता घट रही है, भूजल प्रदूषित हो रहा है तथा जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। देसी गाय आधारित खेती इन समस्याओं का प्राकृतिक समाधान प्रस्तुत करती है। जैविक खाद के उपयोग से मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ती है, जिससे भूमि अधिक उपजाऊ और जीवंत बनती है। मिट्टी में केंचुए, लाभकारी जीवाणु तथा सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ती है, जो प्राकृतिक रूप से पोषक तत्वों का चक्र बनाए रखते हैं।

इसके अतिरिक्त जैविक खेती कार्बन को मिट्टी में संग्रहित करने में भी सहायक होती है। इससे वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा कम करने तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायता मिलती है। जल संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन तथा प्रदूषण नियंत्रण जैसे अनेक पर्यावरणीय लाभ भी इस प्रणाली से प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार देसी गाय आधारित खेती केवल किसान की नहीं, बल्कि पूरे पर्यावरण की सुरक्षा का माध्यम बनती है।

किसान समृद्धि की नई राह

अधिकांश किसान खेती में बढ़ती लागत से परेशान हैं। महंगे उर्वरक, कीटनाशक, बीज और ईंधन खेती की लाभप्रदता को प्रभावित करते हैं। देसी गाय आधारित खेती इन लागतों को काफी हद तक कम कर देती है। गोबर से तैयार कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, घनजीवामृत तथा अन्य जैविक खादों का उपयोग करके किसान उर्वरकों पर होने वाला खर्च बचा सकते हैं। गौमूत्र आधारित जैविक कीटनाशकों से रासायनिक दवाओं की आवश्यकता कम हो जाती है। इससे उत्पादन लागत घटती है और शुद्ध लाभ बढ़ता है।

इसके अतिरिक्त देसी गाय स्वयं अनेक प्रकार की आय का स्रोत बन सकती है। दूध, घी, दही, छाछ, गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट, गोबर से बने दीये, धूपबत्ती, गोकाष्ठ, जैविक उर्वरक, गौमूत्र आधारित उत्पाद, पंचगव्य, प्राकृतिक कीटनाशक तथा अन्य मूल्य संवर्धित उत्पाद किसानों के लिए अतिरिक्त आय के स्रोत बन सकते हैं। यदि किसान इन उत्पादों की ब्रांडिंग एवं विपणन करें तो उन्हें सामान्य कृषि उत्पादन की अपेक्षा कहीं अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

ग्रामीण रोजगार एवं महिला सशक्तिकरण

देसी गाय आधारित कृषि केवल किसानों की आय ही नहीं बढ़ाती, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न करती है। गोबर आधारित जैविक खाद निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट इकाइयाँ, पंचगव्य उत्पाद, प्राकृतिक कीटनाशक निर्माण, जैविक उत्पादों की पैकेजिंग तथा विपणन जैसे अनेक कार्य ग्रामीण युवाओं एवं महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs), किसान उत्पादक संगठन (FPOs) तथा ग्रामीण उद्यमी मिलकर गौ-आधारित उत्पादों का व्यवसाय विकसित कर सकते हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है तथा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है।

देसी नस्लों का संरक्षण भी आवश्यक

भारत में गिर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, कांकरेज, ओंगोल, लाल सिंधी तथा अन्य अनेक उत्कृष्ट देसी नस्लें उपलब्ध हैं। ये नस्लें स्थानीय जलवायु के अनुकूल होती हैं, रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक रखती हैं तथा कम संसाधनों में भी बेहतर प्रदर्शन करती हैं।

इन नस्लों का संरक्षण केवल पशुधन संरक्षण नहीं, बल्कि कृषि, पर्यावरण और जैव विविधता के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण कार्य है। यदि किसान देसी नस्लों को अपनाएँ और उनके संरक्षण में योगदान दें, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी टिकाऊ कृषि प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है।

निष्कर्ष

आज आवश्यकता ऐसी कृषि प्रणाली की है जो उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ मिट्टी, जल, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य की भी रक्षा करे। देसी गाय आधारित खेती इन सभी उद्देश्यों को एक साथ पूरा करने की क्षमता रखती है। यह खेती उत्पादन लागत कम करती है, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है, रासायनिक प्रदूषण घटाती है, जैव विविधता का संरक्षण करती है तथा किसानों के लिए अनेक अतिरिक्त आय स्रोत विकसित करती है।

यदि किसान वैज्ञानिक तरीके से देसी गाय आधारित प्राकृतिक एवं जैविक खेती को अपनाएँ, मूल्य संवर्धन और विपणन पर ध्यान दें तथा कृषि को एक उद्यम के रूप में विकसित करें, तो वे न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

वास्तव में, देसी गाय आधारित खेती केवल एक कृषि पद्धति नहीं, बल्कि टिकाऊ विकास, पर्यावरण संरक्षण और किसान समृद्धि की ऐसी समग्र जीवन शैली है, जो **"समृद्ध किसान–स्वस्थ प्रकृति–सशक्त भारत"** के निर्माण की दिशा में एक सशक्त कदम है।